THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.40

डिजिटल युग में सशक्त महिला एवं उन्नत भारत

डॉ. निशा

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग , महात्मा गांधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद

शोध सारांश

दुनिया की आबादी में महिलाओं के हिस्सेदारी करीब आधी है। घर के कामों से लेकर समाज के दूसरे अहम मामलों को संभलने तक महिलाएं पीछे नहीं है।हालांकि ऐतिहासिक रूप से समाज में उन्हें दोयम दर्जा मिला है, जिससे आर्थिक भागीदारी के कम अवसर, संसाधनों पर सीमित पहुंच व राजनीतिक प्रभुत्व कम है। घर बैठे स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सूचनाओं को इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर सकती हैं। महिलाओं को सशक्त करती सरकारी योजनाएं जैसे PMGDISHA, इंटरनेट साथी, डिजिटल प्लेटफॉर्म ,e-SARAS, UPI, डिजिटल बैंकिंग, फ्यूचर स्किल प्राइम जैसे ऑनलाइन माध्यमों से तकनीकी कौशल प्राप्त हो रहा है एवं विभिन्न क्षेत्र में भागीदारी बढ़ा रही है। महिलाओं की डिजिटल भागीदारी आर्थिक क्षेत्र, शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र, सामाजिक जागरूकता व नेटवर्किंग, स्वास्थ्य एवं कल्याण के क्षेत्र में महिलाओं के लिए परिवर्तनकारी शक्ति रखता है जो समृद्ध एवं उन्नत भारत का स्तंभ है। तेजी से विकसित हो रही डिजिटल दुनिया में प्रौद्योगिकी में प्रगति, नवाचार और विकास को गति देने की अपार क्षमता है। हालांकि डिजिटल समावेशन में लैंगिक असमानता, महिलाओं को डिजिटल उपकरणों और सेवाओं तक पहुंच में बाधा, सांस्कृतिक प्रतिबंध एवं पितृसत्तात्मक मानसिकता सशक्तिकरण की प्रक्रिया को सीमित करती है। डिजिटल युग महिलाओं को अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करता है। महिलाओं की डिजिटल साक्षरता, साइबर सुरक्षा जागरूकता और ग्रामीण डिजिटल अवसंरचना के विकास पर ध्यान देना सतत् विकास के लिए वैश्विक अनिवार्यता है। ऐसा करके हम न केवल वैश्विक आबादी के आदि हिस्से का उत्थान करेंगे बल्कि शक्ल विश्व को एक समृद्ध और न्याय संगत भविष्य की ओर उन्मुख करेंगे।

मुख्य शब्द-डिजिटल सशक्तिकरण, लैंगिक असमानता, डिजिटल विभाजन, समावेशी नीति, सांस्कृतिक प्रतिबंध

प्रस्तावना

भारत में इंटरनेट का आगमन 1995 में हुआ और इसके साथ इस उभरती अर्थव्यवस्था और विकासशील राष्ट्र के लिए अनेक अवसर खुल गए। 7 साल बाद 16 दिसंबर 2002 को भारत की एक अरब से अधिक आबादी को जोड़ने सशक्त बनाने के उद्देश्य डिजिटल एंपावरमेंट फाऊंडेशन (डीईएफ) की स्थापना की गई, जो देश के डिजिटल विकास की दिशा में पहला कदम था। उस समय अधिकांश भारतीयों के पास सूचना, शिक्षा और अवसरों तक पहुंच नहीं थी। 21वीं सदी के डिजिटल युग ने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी), इंटरनेट स्मार्टफोन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने महिलाओं के जीवन में नई संभावनाएं उत्पन्न की। दुनिया की आबादी में महिलाओं के हिस्सेदारी करीब आधी है। घर के कामों से लेकर समाज के दूसरे अहम मामलों को संभलने तक महिलाएं पीछे नहीं है। हालांकि ऐतिहासिक रूप से समाज में उन्हें दोयम दर्जा मिला हुआ है जिससे आर्थिक भागीदारी के कम

अवसर,संसाधनों तक सीमित पहुंच व राजनीतिक प्रभुत्व कम है। डिजिटल युग में महिलाएं अब घर बैठे ही स्थानीय ,राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सूचनाओं को इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त कर सकती हैं महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम बनाने के साथ आर्थिक रूप से स्वतंत्र भी बनाया है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने महिलाओं को सामाजिक आंदोलनों में भागीदारी का अवसर दिया है। ऑनलाइन अभियानों ने लैंगिक न्याय के मुद्दों को राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर उठाया है। ई- गवर्नेंस सेवाओं ने महिलाओं को सरकारी योजनाओं तक सीधी पहुंच प्रदान की है। मोबाइल प्रौद्योगिकी के विकास ने दुनिया को अपनी उंगलियों पर सुलभ बना दिया। महिलाओं को स्मार्टफोन का उपयोग, कौशल सीखने, ऑनलाइन वित्तीय लेन- देन एवं दुनिया के रुझानों से अवगत होने में मदद मिली।

डिजिटल युग में महिलाओं के लिए परिवर्तनकारी संभावनाएं सुनिश्चित हैं, परंतु डिजिटल पहुंच में असमानता सांस्कृतिक प्रतिबंध और पितृसत्तात्मक मानसिकता सशक्तिकरण की प्रक्रिया को सीमित करती है। डिजिटल युग महिलाओं के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों प्रस्तुत करता है। यदि डिजिटल समावेशन को लैंगिक दृष्टिकोण से लागू किया जाए तो यह सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन सकता है। महिलाओं की डिजिटल साक्षरता, साइबर सुरक्षा जागरूकता और ग्रामीण डिजिटल अवसंरचना के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। डिजिटल युग में तकनीक और इंटरनेट की शक्ति ने महिलाओं को शिक्षा, कौशल और स्वरोजगार के माध्यम से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।जब महिलाएं डिजिटल रूप से सक्षम होती है तो वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं जो एक उन्नत विकसित भारत की नींव है।

उद्देश्य

1-डिजिटलीकरण में महिलाओं में लैंगिक समानता और रुढ़वादिता के प्रति सजगता की भावना का विकास करना।

2-विभिन्न प्लेटफॉर्मों के माध्यम से साक्षरता और साइबर सुरक्षा की जानकारी प्राप्त करना।

3- सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना।

4- विभिन्न एप के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त कर सशक्त भारत निर्माण में योगदान देना।

5-उन्नत भारत के निर्माण में महिलाएं सामाजिक निर्वाहक के रूप में।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णता द्वितीय स्रोतों राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्ट, शोध आलेखों एवं ऑनलाइन विषय पर आधारित एक वैचारिक विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

महिलाओं को सशक्त करते उन्नत भारत के प्रमुख स्तंभ

महिलाओं को सशक्त बनाने में डिजिटल एवं साक्षरता बढ़ाने में समुदाय आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम, औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा पहलू और प्रौद्योगिकी तक पहुंच का समर्थन करने वाली सरकारी नीतियां शामिल है। सरकारी योजनाओं जैसे PMGDISHA और इंटरनेट- साथी ने ग्रामीण महिलाओं को कंप्यूटर व इंटरनेट का उपयोग सिखाकर उन्हें सूचना अधिकार से जोड़ा है।

स्वरोजगार और उद्यमिता -डिजिटल प्लेटफॉर्म और e-SARAS जैसी पहलों के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूह अपने हस्तशिल्प उत्पादों को सीधे राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचा रही हैं। वित्तीय सहायता-यूपीआई और डिजिटल बैंकिंग ने महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया है। इसके परिणामस्वरुप वे परिवार और समाज के आर्थिक निर्णय में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

कौशल विकास-फ्यूचर स्किल प्राइम जैसे ऑनलाइन माध्यमों से महिलाओं को तकनीकी कौशल प्राप्त हो रहा है जिससे वह कॉर्पोरेट और आईटी क्षेत्र में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं। महिलाओं की डिजिटल भागीदारी सिर्फ लैंगिक समानता तक सीमित नहीं है बल्कि यह देश के समग्र आर्थिक वृद्धि के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। जब आधी से अधिक आबादी तकनीकी का उपयोग करके सशक्त होती है तो नवाचार बढ़ता है और एक समावेशी

विकसित भारत का निर्माण होता है। डिजिटल युग महिलाओं को सशक्त बनाने में डिजिटल साक्षरता के प्रभाव का पता लगाने हेतु छात्रों, कामकाजी पेशेवरों और आम जनता सहित विभिन्न जनसांख्यिकी समूहों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

डिजिटल कारण की परिणीति उन्नत भारत के रूप में

डिजिटल युग में सशक्त महिला उन्नत भारत की परिणिति तभी संभव होगी जब महिलाओं को तकनीकी और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जाए। यह डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देता है जिससे कि आर्थिक विकास, शिक्षा और निर्णय लेने की प्रक्रिया में समान रूप से योगदान कर सके। डिजिटल परिवर्तन महिलाओं के लिए ऊंचाइयों को छूने का अवसर और लैंगिक अंतर को दूर करने के लिए बेहतर कानून की दिशा में G20 की पहल एक महत्वपूर्ण समयबद्ध कदम है। सूचना एवं संचार तकनीकी वर्तमान समय में समाज के लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण घटक है। तकनीकी प्रगति ने मूल रूप से लोगों के जीवन जीने के तरीके को बदल दिया है। विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ता डिजिटलीकरण उन्नत भारत की संभावनाओं की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है।

आर्थिक क्षेत्र सतत् विकास हेतु महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्त होना जरूरी है। विश्व कल्याण हेतु देश की महिलाओं को समान दर्जा देने, आर्थिक संसाधनों पर उनके अधिकार साथ ही राष्ट्रीय कानून के अनुसार भूमि और संपत्ति के अन्य रूपों, वित्तीय सेवाओं, विरासत प्राकृतिक संसाधनों पर स्वामित्व और नियंत्रण तक पहुंच सुनिश्चित हो।

शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में-शिक्षित व कुशल महिलाएं परिवार और समुदाय के बीच कड़ी का कार्य करती हैं।वह रोल मॉडल बनाकर दूसरों को शिक्षा और प्रशिक्षण पाने हेतु प्रेरित करती हैं। शिक्षा महिला सशक्तिकरण हेतु प्रथम मूलभूत साधन है।कौशल विकास द्वारा महिलाओं को न केवल रोजगार प्रदान करना फिर उनके द्वारा किए गए कार्यों में गुणात्मक सुधार कर कार्य प्रदर्शन को बेहतर तथा उत्पादक बनाना है। महत्वपूर्ण ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे कोर्सेज, यू-ट्यूब और सरकारी लर्निंग पोर्टल महिला सशक्तिकरण की राह में मिल का पत्थर साबित हुए है। सामाजिक जागरूकता वन नेटवर्किंग-आज का युग सोशल मीडिया का युग है जिनकी मौजूदगी और सक्रिय भागीदारी ने महिला सशक्तिकरण की विचारधारा को शीघ्रता से और व्यापक रूप से फैलाया है। इसने ब्लॉग ,चैट ,ऑनलाइन अभियान, ऑनलाइन चर्चा मंचों,ऑनलाइन समुदाय के माध्यम से महिलाओं के मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा करने हेतु विशाल मंच दिया है। जिससे महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में सफल रूचि के साथ प्रभुत्व कायम किया है। स्वास्थ्य एवं कल्याण के क्षेत्र में-महिला इंटरनेट का उपयोग करके जन्म स्वास्थ्य, मातृ स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने वाली जानकारी, सेवाओं व पहलों से जागरूक हो रही हैं। टेलीमेडिसिन, सेवाओं और स्वास्थ्य एप्स ने महिलाओं के स्वास्थ्य देखभाल में क्रांति ला दी है।

डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, उपयोग और उसकी अपरिहार्य आवश्यकता ने शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता, वित्तीय समावेशन एवं राजनीतिक सहभागिता में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा दिया है। निष्कर्षत: डिजिटल युग महिलाओं के लिए परिवर्तनकारी शक्ति रखता है जो समृद्धि एवं उन्नत भारत का स्तंभ है। यह महत्वपूर्ण है कि कोई भी महिला डिजिटलीकरण के अवसर का लाभ उठाए एवं लक्ष्य को परिणिति करना सुनिश्चित करें जो उन्नत भारत की दशा एवं दिशा तय करेगा।

डिजिटल युग में सशक्त महिला एवं उन्नत भारत के मार्ग में चुनौतियां एवं संभावनाएं

वर्तमान समय में जहां डिजिटल कारण का महत्व बढ़ा है वहीं प्रत्येक क्षेत्र में संभावनाओं के साथ चुनौतियां भी हैं। वर्ष 1990 में वैश्वीकरण की शुरुआत के साथ-साथ प्रौद्योगिकी में पुरुष वर्ग का वर्चस्व था लेकिन जैसे-जैसे महिलाएं क्षेत्र में शामिल होती गई पर्यावरण, सामाजिक, राजनीतिक, बैंकिंग, चिकित्सा एवं अन्य क्षेत्रों में अपने कौशल से प्रभुत्व स्थापित किया। इसी तरह महिलाओं का डिजिटलीकरण प्रक्रिया में भाग लेने, संबल प्रदान करने और निर्णय लेने एवं क्षमता निर्माण करने में सहयोग प्रदान करता है।

देशभर में डिजिटल साक्षरता सुधार के बावजूद महिलाओं को प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का उपयोग करने में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इंटरनेट का उपयोग करने के आंकड़ों के अनुसार केवल 29 प्रतिशत महिलाएं इंटरनेट का उपयोग करती हैं। ग्रामीण भारत में महिलाओं के लाभ हेतु प्रौद्योगिकी केंद्रित परियोजनाएं चलाई जा रही हैं लेकिन वह असफल हो रही है क्योंकि महिलाओं को आवश्यक उपकरण नहीं उपलब्ध कराए जाते हैं। ग्रामीण महिलाएं जो डिजिटल रूप से साक्षर हैं, वे प्रौद्योगिकी का उपयोग करने और आत्मनिर्भर बनने के बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं। एक और जहां डिजिटल सशक्तिकरण बड़ा है वहीं दूसरी डिजिटल विभाजन, लैंगिक असमानता,साइबर उत्पीड़न ,सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिबंध और संरचनात्मक पितृसत्ता अब भी सशक्तिकरण की प्रक्रिया में बाधा बनी हुई है किंतु सामान औसत सुनिश्चित करने हेतु समावेशी नीतिगत हस्तक्षेप अनिवार्य है।

कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा की अपरिहार्यता रही एवं ऑनलाइन सुविधा लोगों की जरूरत को सर्वसुलभ कर जीवन शैली को आसान बना दिया। ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफार्म, सरकारी ई-लर्निंग पोर्टल और डिजिटल विश्वविद्यालय ने महिलाओं को उच्च शिक्षा तक पहुंच प्रदान की है। ई-कॉमर्स प्लेटफार्म ने गृहणियों और स्वयं सहायता समूहों को बाजार से जोड़ा है। डिजिटल भुगतान प्रणाली यूपीआई ने वित्तीय लेनदेन को सरल बनाया है। स्टैंड-अप- इंडिया योजना के अंतर्गत महिला उद्यमियों को ऋण सहायता दी जाती है। महिलाओं की डिजिटल भागीदारी से घरेलू आय में वृद्धि और आर्थिक सहायता में सुधार की संभावनाएं लक्षित हो रही हैं। ऑनलाइन उत्पीड़न, पहचान की चोरी और निजी डेटा का दुरुपयोग, साइबर अपराध महिलाओं के लिए गंभीर चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए सरकारों, व्यवसायों और नागरिक समाज के सहयोगात्मक प्रयासों के साथ साइबर सुरक्षा को सुदृढ़ किया जाए और कानूनी जागरूकता बढ़ाई जाए।

सरकारों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) से संबंधित करो को समाप्त करके उपकरणों और सेवाओं तक की किफायती पहुंच को प्रोत्साहित करके लागत कम करनी चाहिए। साथ ही सार्वजनिक- निजी भागीदारी को बढ़ावा देने से कम सुविधा वाले क्षेत्रों में इंटरनेट कवरेज का विस्तार हो सकता है जिससे सभी को समान रूप से इंटरनेट की सुविधा मिल सके यह ज्यादातर लड़कियों और महिलाओं के लिए नितांत आवश्यक है क्योंकि यह अवसरों के लिए एक प्रवेश बिंदु है भारत जैसे विकासशील देशों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर कम है। यदि महिलाएं शिक्षित होंगी तो उन्नत भारत की दिशा में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए स्वयं भी सशक्त स्वावलंबी होंगी।

निष्कर्ष

डिजिटल क्रांति में विश्व समाज को नेटवर्क समाज में रूपांतरित कर दिया। इंटरनेट, मोबाइल तकनीकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने सामाजिक संपर्क, आर्थिक उत्पादन और राजनीतिक संवाद के स्वरूप को बदल दिया है। भारत में डिजिटल परिवर्तन विशेष सूची 2004 के बाद तीव्र हुआ जब डिजिटल इंडिया कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इस पहल का उद्देश्य डिजिटल अवसंरचना का विकास, सीमाओं की ऑनलाइन उपलब्धता और नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण रहा। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ता की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है किंतु लैंगिक अंतर अभी भी स्पष्ट है National statical office 2021 की रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की इंटरनेट तक पहुंच पुरुषों की तुलना में काफी कम है। NITI Aayog(2022) में अपनी रिपोर्ट में डिजिटल समावेशन को महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्त बताई है।

इसी प्रकार UN Women (2020) और UNESCO (2019) ने वैश्विक स्तर पर डिजिटल लैंगिक विभाजन को गंभीर चिंता का विषय माना है। तेजी से विकसित हो रही डिजिटल दुनिया में प्रौद्योगिकी में प्रगति, नवाचार, और विकास को गति देने की अपार क्षमता है। हालांकि डिजिटल समावेशन में लैंगिक असमानता महिलाओं को डिजिटल उपकरणों और सेवाओं तक पहुंच में बाधा , सांस्कृतिक प्रतिबंध एवं पितृसत्तात्मक मानसिकता सशक्तिकरण की प्रक्रिया को सीमित करती है। डिजिटल युग महिलाओं के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों प्रस्तुत करता है। यदि डिजिटल समावेशन को लैंगिक दृष्टिकोण से लागू किया जाए तो यह सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन सकता है ।महिलाओं की डिजिटल साक्षरता, साइबर सुरक्षा जागरूकता

और ग्रामीण डिजिटल अवसंरचना के विकास पर ध्यान देना सतत् विकास के लिए वैश्विक अनिवार्यता है डिजिटल क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों राष्ट्र की समग्र सामाजिक आर्थिक प्रगति को भी प्रभावित करती हैं। डिजिटल युग में महिलाओं को सशक्त बनाना केवल तकनीकि अंतर को कम करना ही नहीं यह मानवता की उन्नति का माध्यम है। जब महिलाएं डिजिटल रूप से सशक्त होती है तो समाज उनके आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति एवं सतत विकास में योगदान से लाभान्वित होता है। अब आवश्यकता है कि विश्व भर की सरकारें और हित-धारक इस मुद्दे की गंभीरता को पहचाने और डिजिटल समानता की दिशा में साहसिक कदम उठाएं। ऐसा करके हम न केवल वैश्विक आबादी के आधे हिस्से का उत्थान करेंगे बल्कि सकल विश्व को एक समृद्ध और न्याय संगत भविष्य की ओर उन्मुख करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- डिजिटल युग में महिलाओं को सशक्त बनाना : भारत में डिजिटल समावेशन यात्रा- डिजिटल एंपावरमेंट फाऊंडेशन ,डीईएफ

https://share.google/nuN1Ihh72A4wiRyG

2- कुशवाहा, डॉ. शिव बिहारी "महिला सशक्तिकरण पर डिजिटलकरण का प्रभाव" (रीवा जिले की विशेष संदर्भ में)

IJARSCT -international Journal of Advanced Research in Science Communication and Technology International Open-Access Double Blind, Peer reviewed Multidisciplinary online Journal,Volume 3, Issue 3, December 2023

3- प्रियंका और डॉ. विद्या पञ्चाङ्गम ,"डिजिटल युग में महिलाओं का सशक्तिकरण अवसर, चुनौतियां और सामाजिक परिवर्तन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण"

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR) Volume 8, Issue 2 March-April 2026

4- शर्मा, विष्णु कुमार "डिजिटल युग में महिला सशक्तिकरण :अवसर और चुनौती

International Journal of Multidisciplinary Trends; 2025 7(1) 110- 112

5- हुसैन, नजर एवं शुमैला फुलपोटो ,"डिजिटल साक्षरता : डिजिटल युग में व्यक्तियों को सशक्त बनाना" UGC Approved Journal Number-43602 Research Gate IJRAR ,जुलाई 2024

DOI-10.61650/alj.V212.231

6- UN Women (2020) Gender Equality in Digital Age United Nation

7- National Statical office (2021) Household Social consumption on education in India Ministry of Statistics and programme Implementation

8- NITI Aayog (2022) Digital Inclusion and Women empowerment in India. Government of India

Cite this Article:

निशा, डॉ.(2026). डिजिटल युग में सशक्त महिला एवं उन्नत भारत. The Research Dialogue, 5(2), 386–390., Volume-05, Issue-02, July-2026. DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.40

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. निशा

डिजिटल युग में सशक्त महिला एवं उन्नत भारत

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X,
Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.40